International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 6; November 2016; Page No. 55-56

उदय प्रकाश की कविताओं में स्त्री–उत्पीड़न का चित्रण

रीना परवाल

शोधार्थी, हिंदी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

स्त्री–विमर्श, नारीवादी चर्चा, स्त्रीवादी दृष्टिकोण कुछ ऐसे विषय है जो स्त्री जीवन को परत दर परत उघाड़ते है। पुरुष के समान स्त्री भी इस समाज का अभिन्न अंग रही है परन्तु भारतीय समाज अथवा पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्री को समानता का दर्जा नहीं मिला। समय एवं परिस्थितियों के साथ–साथ औरत की स्थिति भी बदलती रही। वैदिक युग में जहाँ स्त्रियों को सम्मानजनक कहा जा सकता है वहीं मध्य–युग में इस सम्माननीय दर्जे को ऐसा आघात लगा कि आज हजारों वर्ष बीत जाने पर भी औरतों की दशा में सराहनीय सुधार नहीं हुआ। मध्यकाल में तो नारी की स्थिति इतनी अधिक अमानवीय हो गई कि उसकी स्वतन्त्र सत्ता लगभग समाप्त हो गई। अब उसे केवल निर्बला, भोग्या और असहाय व्यक्तित्व के रूप में ही पहचाना जाने लगा। प्राचीन काल में भारतीय दर्शनों में 'यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' जैसी पंक्ति कहकर नारी को देवी स्वरूपा घोषित कर दिया। परन्तु जैसा कि हम प्रकृति के 'परिवर्तन–नियम' को जानते हैं, क्या यह उक्ति वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी उतनी प्रासांगिक है? जितनी उस समय में थी। आज उसे एक ऐसी दासी माना जाता है जो अपना सारा जीवन पुरुषों की सेवा व विकास में लगा देती है और जिसे इसके लिए न तो कोई मेहताना मिलता है और न ही सराहना। और यदि कुछ मिलता है तो वह है अपने अस्तित्व के होने का प्रश्न। स्त्री जीवन की विडम्बना ही यही है कि वह अपनी भूमिका स्वयं निर्धारित नहीं करती। उसके लिए यह निर्धारण कभी उसका पिता कभी पति तो कभी पुत्र करता है।

स्त्री का आत्म–संघर्ष अपनी निरन्तरता में प्रत्येक युग में किसी न किसी रूप में रहा है। औरत युगों–युगों से पुरुषों द्वारा किये जाने वाले अत्याचारों को सहती आई है। वह एक अजीब सी घुटन, निराशा व कुण्ठा से घिरी होती है। स्त्री के इसी अतृप्त जीवन को उदय प्रकाश की कविताओं में स्थान मिला है। इन कविताओं के जरिए स्त्री जीवन का प्रत्येक पहलू पाठक के समक्ष अनायास ही साकार हो जाता है और एक प्रश्न भी कि– क्या स्त्री इस समाज में ऐसे ही जीवन की हकदार है? "औरते शीर्षक लंबी कविता में उदय प्रकाश स्त्री यातना के जो ब्यौरे दे रहे हैं वे यथाथ्र की क्रूर चरमता सूचित करने वाले है।"[1] समाज सदियों से परम्परागत रूढ़ियों का जामा पहनकर औरत को छलता आया है। उसका शोषण अब इतना बढ़ गया है कि वह चीत्कार कर उठती है। इसी करूण कथा को उदय प्रकाश की कविताएं हमारे सामने रखती हैं।

उनकी 'औरतें', 'तपस्या', 'परदा' और पंचनामें में जो दर्ज नहीं हैं स्त्री जीवन की पीड़ा से रू ब रू कराती कविताएँ है। यहाँ कवि स्त्रीवादी होने का दावा नहीं करता बल्कि उसके साहित्य में यह विशेषता स्वयं ही परिलक्षित हो जाती है। ऐसे में साहित्यकार का स्त्री की दशा को लेकर चिंति होना महज साहित्यिक लाभ नहीं, बल्कि समाज के प्रति संवेदनशील रवैया भी है। एक औरत के साथ होने वाले अत्याचारों को देखकर आँखे मूँद लेना और मूक दर्शक बन जाना एक संवेदनशील साहित्यकार का काम नहीं है। उदय प्रकाश की कविताओं का स्त्री विमर्श अपने तीखे प्रश्नों से पाठकों को सोचने पर मजबूर कर देता है "इनकी कविताओं की औरत वह औरत है जो बैल की तरह अपने कंधों पर सभ्यता का दायित्व उठाये हुए है। इनकी कविताओं की औरत वह औरत है जो दिन भर रोजी रोटी की मशक्कत में लगी रही और शाम ढले पर्स में खुदरा नोट निकालकर कंडैक्टर से अपने घर जाने का टिकट ले रही है।"[2]

'औरतें' कविता औरत के जीवन में पूरी तरह रचे–बसे भय और आंतक को सबके सामने लाने का प्रयास करती है, नारी–शोषण, स्त्री–प्रताड़ना और महिला अत्याचार की भयावह तस्वीर हमें दिखाती है।

आज वह दुखी और अपमानित होकर या तो स्वयं ही अपनी जीवन लीला समाप्त कर रही है या परिवार के लोग ही कोई षडयंत्र रचकर उसे मौत के घाट उतार देते हैं –

> "जब किसी एक दिन उन्हें मिट्टी के तेल या पेट्रोल में
> भिगोया गया और एक तीली उन्हें दिखायी गयी
> या जिस तकियें में उन्होंने 'गुडनाइट' या 'नमस्ते' और अज्ञात फूल काढ़ रखे थे वही तकिया उनकी नाम पर देर तक दबाया गया।"[3]

एक औरत जिसने अन्याय सहकर भी चुप्पी साध रखी है और अपनी ही किस्मत को दोषी मानती है–

> "अस्पताल में हजार प्रतिशत जली हुई औरत का कोयला दर्ज कराता है।
> अपना मृत्यु पूर्व बयान कि उसे नहीं जलाया किसी ने
> उसके अलावा बाकी हर कोई है निर्दोष
> गलती से उसके हाथों ही फूट गयी किस्मत और फट गया स्टोव।"[4]

उदय की दुनिया की औंरते किन–किन अमानवीय परिस्थितियों में साँस ले रही है, इसका ब्यौरा उनकी कविता में स्पष्टतः दिखाई देता है –

> "संदेह, असुरक्षा और डर से घिरी एक औरत उसके पिटने से पहले बहुत महीन आवाज में पूछती है पति से
> कहाँ खर्च हो गये आपके पर्स में से तनख्वा के आधे से ज्यादा रुपये?"[5]

इस प्रकार के अमानवीय और असहनीय व्यवहार के बाद भी वह औरत सुहागन रहने की कामना करती है और पति की लंबी आयु के लिए करवा चौथ का व्रत भी करती है। इस भय और तिरस्कार की वह इतनी आदी हो चुकी है कि थक–हार कर यह कहने को मजबूर है कि –

> "एक औरत हार कर कहती है– तुम जो जी आये कर लो मेरे, साथ बस मुझे किसी तरह जी ले ने दो।"[6]

'बस'..... इस छोटे से शब्द में औरत के जीवन जीने की आकांक्षा छुपी है परन्तु स्त्री की सहज निश्छल जीवन जीने की यह इच्छा इस भययुक्त, आतंकित समाज में संदेहास्पद है।

इस कविता की अंतिम पंक्तियाँ एक गम्भीर संकट सामने लाती है। आज लिंगानुपात के असंतुलन से समाज में असंतुलन की स्थिति पैदा होने का भय बढ़ चुका है। कन्याओं को गर्भ में ही कत्ल किये जाने के नृशंस व्यवहार का कवि बहुत दर्दनाक चित्रण करता है–

"हजारो लाखों छुपती है गर्भ के अंधेरे में
इस दुनिया में जन्म लेने से इन्कार करती हुई
वहाँ भी खोज लेती है उन्हें दिया ध्वनि तरंगे
वहाँ भी भ्रूण में उतरती है हत्यारी कटार।"[7]

जन्म से लेकर मृत्यु तक स्त्री का जीवन अनेक प्रकार की कठिनाईयों का सामना करता है। कई बार तो वह इन कठिनाईयों के कारण अपनी जान तक गवां देती है परन्तु इसका किसी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। औरत पढ़ी–लिखी हो या अनपढ़ इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। सभी का भाग्य काली स्याही से ही लिखा गया है। जहाँ किसी खुशनुमा रंग की अपेक्षा भी नहीं की जा सकती। "एक पढ़ी लिखी हिन्दुस्तानी औरत की त्रासदी यह है कि अपनी निजी जिन्दगी का एक महत्वपूर्ण और सुनहरा हिस्सा वह अपना घर सुचारू रूप से चलाने में, पति की रूचि और पंसद के अनुसार ढालने में और अपने बच्चों की पढ़ाई तथा उनके भविष्य की चिंता में होम कर देती है।"[8] उदय प्रकाश की कविता 'तपस्या' में औरत को एक तपस्वी की भाँति तल्लीनता से तपस्या करते बताया है। कपड़ों के माध्यम से वह पूरे परिवार को जोड़कर रखना चाहती है। उसे देखकर लगता है कि वह अपनी जिम्मेदारियों के प्रति पूरी तरह से तल्लीन है। वह घर के किवाड़, छप्पर, खपरैल, मुंडेर से लेकर मयार, बच्चों की बीमारी सभी का ध्यान रखती है–

"थेगली लगा रही है
पति के अपमान और
अपनी पठी के
घावों पर
आनन–फानन
सब सिले जा रही है
वह सिल रही हे
और गा रही है
और रो रही है
और हँसती भी जाती है।"[9]

उस औरत की यह हँसी सहज नहीं बल्कि व्यंग्यात्मक है। वह समाज के दोगलेपन पर हँसती है। ऐसा समाज जहाँ पुरुष व नारी में भेद किया जाता है। वह ऐसे पुरुष समाज पर हँसती है जिसने स्त्री के लिए अलग आचार संहिता बना रखी है और जिसके दायरे में रहना औरत की नियति। यह नियति औरत को कभी परदे से बाहर नहीं आने देती। उदय प्रकाश स्त्री–जीवन के परदे के पीछे की वस्तुस्थिति को भली–भांति जानते हैं–

"परदे के बाहर कभी भी नहीं गिरेंगे उस स्त्री के आँसु
उसके लिए इतने और ऐसे असह्य दुख लिखे हैं
किसी अत्यचारी पुरुष ने
रोती रहेगी स्त्री परदे के भीतर
और परदे के बाहर इसी तरह शताब्दियों तक
तब तक उसे निर्देश होगा
जब तक मिलती रहेगी अनुमति।"[10]

स्त्री–जीवन की विडम्बना तो देखिए कि पुरुष से अलग उसकी कोई गति नही। उसके साथ जो कुछ भी हो उस पर वह केवल रो सकती है। इसके अतिरिक्त यदि वह कुछ कर सकती है तो चुप रह सकती है। "औरत चुप रहे तभी महान है आज भी एक आदर्श औरत की तस्वीर यही है। यह बंद ताला जैसे ही खुलता है औरत अपने सदियों पुराने गरिमामय महिमामंडित एंटीक आसन से नीचे गिरा दी जाती है।"[11]

भारतीय परिवार में एक लड़की को बचपन से इस प्रकार से तैयार किया जाता है कि वह शादी के बाद एक लंबा समय दबावों को झेलने और स्वयं को परिवार के अन्य सदस्यों के अनुरूप बदलने में बिता देती है। इस लबें समय में उसे शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताडित होना पड़ता है। मनुष्य के लिए सर्वाधिक तकलीफदेह व असमंजस वाली स्थिति यही मानसिक प्रताड़ना है जिसका जिक्र तक नहीं किया जाता क्योंकि खुद औरत मरते दम तक इसकी शिनाख्त नहीं कर पाती। "उदय प्रकाश की कविताओं में यही स्त्री है जिसकी आत्महत्या का वास्तविक कारण किसी पंचनामें में दर्ज नहीं है।"[12] पुलिस शव के इर्द–गिर्द और शरीर की चोटों को तो पंचनामें में जरूर दर्ज करती है परन्तु इस हँसी को वह दर्ज नहीं करती –

"यह तथ्य पंचनामें में पुलिस दर्ज नहीं करती
लेकिन हर कोई इसे देख सकता है
कि ठीक मृत्यु के बाद
एक बहुत सघन
एक बहुत स्वतंत्र सी हंसी उनके होठों पर आती है
उनके शव के इर्द–गिर्द और उनके शरीर पर पाई गई
चीजों और चोटों की सूची में इस हंसी का
ब्यौरा अक्सर छूट जाता है।"[13]

यहाँ कविता में चीख है, आँसु है, यातना है, हाहाकार है, चीत्कार है, मर्मभेदी आर्तनाद है। ये कविताएँ दहशत पैदा करने वाले यथार्थ का प्रतिबिम्ब है। उदय प्रकाश की औरतों, महिलाओं व लड़कियों पर होने वाले अत्याचारों की लिस्ट बहुत लम्बी है। कवि का यह स्त्री विमर्श पाठक खास तौर से स्त्री को उन अन्तर्विरोधों को पहचानने की समझ उपलब्ध कराता है, जिनकी वजह से वह उपेक्षित, असुरक्षित तथा अस्तित्वहीन जीवन जीने को मजबूर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीं

1. परमानन्द श्रीवास्तव, कविता का अर्थात् 1999, पृ0 242।
2. शीतल वाणी, अगस्त–अक्तूबर 2012, पृ0 239।
3. उदय प्रकाश, रात में हारमोनियम, 1998, पृ0 32।
4. वही, पृ0 32।
5. वही, पृ0 31।
6. वही, पृ0 32।
7. वही, पृ0 33।
8. सुधा अरोड़ा, आम औरत : जिन्दा सवाल, 2009, पृ0 47।
9. उदय प्रकाश, रात में हारमोनियम, 1998, पृ0 43–44।
10. वही, पृ0 96–97।
11. सुधा अरोड़ा, आम औरत जिन्दा सवाल, 2009, पृ0 48।
12. शीतल वाणी, अगस्त–अक्तूबर, 2012, पृ0 239।
13. उदय प्रकाश, रात में हारमोनियम, 1998, पृ0 48।